सत्य दर्शन

सत्य दर्शन

सत्य का दर्शन

पहला संस्करण : फरवरी, 2025

प्रस्तावना

कभी आपने सोचा है कि अगर कोई आदमी 100 साल तक जीवित रहा तो पता है वह कितने दिनों तक जीवित रहेगा ? हर साल में 365 दिन है तो 100 × 365 = 36,500 दिन । इसका मतलब है कि अगर कोई 100 साल तक जीवित रहता है, तो वह 36,500 दिनों तक जीवित रहेगा । लेकिन वर्तमान समय के अनुसार 100 साल तक कौन जी रहा है ? सब कुछ ठीक रहा तो 60 साल जीने के लिए काफी है । उसके बाद यदि वे जीवित भी रहे तो उन्हें कोसना, पीटना और कोई काम करने में असमर्थ होना पड़ता है । तो मान लीजिए कि 60 साल काफी हैं। इन 60 साल के लिए यदि हम गिने तो 60 × 365 = 21,900 दिन । इसमें 30 साल के लोगों के लिए आधा जीवन पहले ही खत्म हो चुका है । बाकी 10 या 11 हजार दिन भी नहीं हैं। यह शेष जीवन भी जीवित रहने की गारंटी नहीं है । बड़ों ने कहा दिन –दिन मरते 100 साल जीना लेकिन, “ हर दिन नहीं हर पल का जीना मुश्किल है ” हाँ, हम नहीं जानते कि हमारा जीवन किस क्षण में खत्म हो जाएगा हम को पता नहीं ।

मैंने यह सब क्यों कहा है, यह समझने लिए कि जीवन कितना छोटा है । यह आदमी कम से कम 30 हजार दिन भी नहीं जिएगा चाहे कितना भी सोचे, कितना भी प्रयास कर ले यहीं रहने केलिए । इस जीवन के प्रति आशा बढ़ाकर अपने आपको खुद धोखा दे रहा है । सत्य के साधक होने के नाते कृपया कुछ समय निकलें इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें सोचें और स्पष्ट निर्णय लें ।

बाद में देखेंगे करके छोड़ दिया तो एक दिन जरूर पछताएंगे । अतः कृपया इस पुस्तक को पूरा पढ़ें । कृतार्थ हों धीमा को प्राप्त हों ।

मोक्ष मार्ग को पा सकें ।

प्यार से....

आपका हितैषी

सत्य दर्शन

सिकंदर महान सम्राटों में प्रसिद्ध है,जिन्होंने दुनिया के कई देशों पर विजय प्राप्त की । उन्होंने भयानक युद्ध लड़े और रक्तपात किया, कई लोगों की जान ली और राज्य का विस्तार किया । उन्हें एक बार तेज बुखार हुआ! उन्होंने सोचा "बुखार कम हो जायेगा ।" लेकिन देखते - देखते बुखार और बढ़ गया । तबीयत बिगड़ गया और एक भयानक जहरीले बुखार में बदल गया । डॉक्टरों ने कितनी कोशिश की और कितने अलग-अलग उपचार किए, यह और भी बढ़ गया, लेकिन यह कम नहीं हुआ । वह मौत को समान करना पड़ा । मरने से पहले उसने अपने आस -पास के लोगों से एक बात कहीं । मैं मरने के बाद एक ताबूत बनाएंगे, हे ना! । इस पर उन्होंने कहा बेशक "फिर उसने कहा," मेरे लिए बने ताबूत के लिए, ताबूत में दो छेद कर दो, ताकि मेरे दाएंऔर बाएं हाथ ताबूत से बाहर निकाले जा सकें , इसमें पूरे शरीर को डालें और मेरे दोनों हाथों को उन छेदों से बाहर निकलें । इसी तरह, 'जिन डॉक्टरों ने मेरी इलाज करके मुझे बचा नहीं पाए उन्हें मेरे ताबूत को ढोना है, और मेरा ताबूत के पीछे डॉक्टरों को चलने के लिए कहें, " उन्होंने कहा " यदि ईश्वर किसी व्यक्ति को जीने का मौका नहीं देता है, तो वह जीने के लिए कितने प्रयास, वैद्य करने पर भी व्यर्थ हो जाएगा।

क्योंकि "मैं सिकंदर हू पूरी दुनिया को जीतना चाह और पूरी पृथ्वी और सभी राज्यों पर कब्जा करना चाहा था । मुझे कई लोगों की बलि चढ़ा कर इसे प्राप्त करना पड़ा। लेकिन कम से कम 5 साल के लिए भी उसका अनुभव न करने 33 साल की कम उम्र में अपना जीवन समाप्त करना पड़ा " । मैं पूरी दुनिया को अपने नियंत्रण में रख सकता था, आखिर मुझे एहसास हुआ कि जीवन मेरे वश में नहीं बल्कि भगवान के वश में है । इसलिए मैंने अपने जीवन के माध्यम से लोगों को कोई संदेश नहीं दिया । कम से कम अपनी मृत्यु में मुझे लगा कि अपने लोगों को एक संदेश देना चाहिए । मुझे अपने खाली हाथों का सच उन मासूम लोगों को बताना चाहिए । गर्भ से जो मेरी तरह इस दुनिया को जितना, कामना और अनुभव करना चाहते हैं । यानी मैं इस दुनिया में अपनी माँ के कोख से खाली हाथ आया रात- दिन मेहनत करके, भोजन और नींद से दूर रहकर, देशों को जीतकर, बिना सुख चैन से व्यापक रूप से कमाया लेकिन बहुत ही कम उम्र में अचानक अपना जीवन समाप्त करके और बिना कुछ लिए खाली हाथ चला जा रहा हूँ। वह कोई भी हो, यही सच है " कहकर मृत्यु को प्राप्त किया।

यदि हम इस मामले पर विचार करें, सम्राट, राजा, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, फिल्म अभिनेता, महान डॉक्टर इतिहास के पन्नों में महान लोगों के रूप में प्रवेश करने वाले कई लोग इस दुनिया में आग में भस्म हो गए हैं और अन्य मिट्टी में धूल बन गए हैं... क्या इस सच को हम, माना कर सकते हैं?

"हर आरंभ का एक अंत होता है और हर इंसान के जीवन का आरंभ और अंत होता है" । यह अंत (मृत्यु) कोई ऐसी चीज नहीं है जिसके बारे में हमें अन्यथा सोचने की जरूरत है । लेकिन यह मृत्यु सभी के लिए अनिवार्य है । इसलिए जन्म लेने वाले प्रत्येक मनुष्य को अपने अंत के बारे में सोचना चाहिए और सावधान रहना चाहिए । लेकिन, बहुत से लोग वास्तव में इस पर ध्यान नहीं देते हैं । उनके साथ जीवन की शुरुआत करने वाले भी, उनसे छोटे भी, उनकी आंखों के सामने से गायब हो जाते हैं और भाप की तरह गायब हो जाते हैं, यह हम आंखों से देखते हुए भी, वे मर चुके हैं, लेकिन मैं आसानी से नहीं मरूंगा, मैं यहाँ स्थिर रहूँगा अपने आप को धोखा देते हुए उसी धोखे में जी रहा है ।

कुछ लोगों को श्मशान वैराग्य होती है, यानी जब किसी दोस्त या रिश्तेदार या पड़ोसी की मृत्यु हो जाती है, तो उसके अंतिम संस्कार में शामिल होने वालों के शब्द सुनते हैं, हाँ ... क्या है ? जादूई जीवन वह कितना व्यथित था आखिर क्या लेके चला गया ? यह जीवन अशाश्वत है । "यह जीवन क्षणभंगुर है," कहते हैं ।

लेकिन आप जानते हैं? जब अंतिम संस्कार समाप्त हो जाता है, तब तक जो लोग निराशा के शब्द कह चुके हैं, वे वास्तविकता के बारे में नहीं सोचते हैं, मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में नहीं सोचते हैं और फिर से भ्रम में पड़ जाते हैं । इसलिए इसे श्मशान वैराग्य कहा जाता है । वह भाव केवल श्मशान में ही होता है । जब यह बाहर आता है तो यह भाव गायब हो जाता है ।

आप भी यह जो पढ़ रहे हैं इसे पढ़ रहे हैं । उनकी तरह मत सोचो, थोड़ा अलग सोचो । आजकल लोग व्यस्त हैं । वे वास्तव के बारे में सोचने की स्थिति में नहीं है । एक दिन के 24 घंटे भगवान ने मनुष्य को दी है, तो वह दिन में कम से कम एक घंटा भी भगवान को समर्पित किए बिना 24 घंटे अपनी कमाई, अपनी खुशी और अपने लोगों की खुशी पर खर्च करता है । अंत में यदि किडनी खराब हो जाते हैं, या हृदय रोग या लिवर रोग हो जाता है जो रोग दूर नहीं होता, बिना दवा का रोग आ जाता है और मृत्यु के निकट हो जाता है तो उस दिशा हीनता की स्थिति में भक्ति गठरी बन जाती है और कुछ मूर्ख और ज्ञानी लोग हैं जो उस अवस्था के बारे में सोचते भी नहीं हैं..! इसलिए हमें परमेश्वर के बारे में सोचना और जानना चाहिए, उस निर्माता के बारे में जिसने हमें तब बनाया जब सब कुछ अच्छा था, हम हमारे अंत के बारे में सोचना है और जानना है।

क्या कोई वास्तविक ईश्वर है?

वर्तमान में सब्यता के विकास की पृष्ठभूमि में नास्तिकता बढ़ गई है और ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है । मनुष्य की हैसियत बढ़ गई है । कई लोगों ने यह तर्क देना शुरू कर दिया कि मनुष्य अपने आप पैदा हुआ था और ज्ञान के सहारे बढ़ता गया और यह कि मनुष्य ही भगवान है और कोई दूसरा भगवान नहीं है

जो भी घड़ा स्वयं नहीं बनेगा । कुज़्हार अपने हाथों से मिट्टी की गांठ को चाक पर रखकर घड़ा बनाता है । कोई भी भवन अपने आप नहीं बनता । इसे बनाने वाला एक होता है । साथ ही, मानव जीवन के लिए आवश्यक सभी संसाधनों और व्यवस्थाओं से युक्त इतनी सुंदर रचना, क्या यह सृष्टि स्वयं निर्मित है? क्या इसे बनाने वाला कोई नहीं है? कितना दुर्भाग्यपूर्ण । घड़ा है, मतलब कुम्हार है जिसने बनाया है । एक अच्छी इमारत है जिसका अर्थ है कि इसे बनाने वाला एक मिस्त्री है । साथ ही, सृष्टि के अस्तित्व का अर्थ है कि एक निर्माता है जिसने इसे बनाया है। यदि पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी थोड़ी अधिक हो जाए तो पृथ्वी बर्फ की तरह जम जाएगी । यदि वह दूरी थोड़ी भी कम हो तो पृथ्वी जलकर राख हो जाएगी । वास्तव में पृथ्वी पर जीवन को जीवित रहने देने के लिए पृथ्वी कितनी दूर होना है, इसे इस तरह व्यवस्थित किया गया है कि ऋतुएँ संभव है । क्या वे अनियमित से बने हुए ?

चलिए कुछ और सोचते हैं । हम जन्म से देखते आ रहे हैं । कि उस जीववयु के बारे में क्या जो पृथ्वी पर अंतर्निहित रूप से परिचालित होती है, यानी हवा ? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि प्रकृति में हवा सिर्फ 5 मिनट के लिए रुकी हो.... ? एक ऐसी स्थिति जहां प्रकृति के सभी जीवित प्राणी लकड़ी के खिलौनों की तरह अचल होने की स्थिति है । लेकिन, यह जीववयु बिना रुके ही लगातार घूम रही है । अनेक जीवों को जीवित रहने के लिए उपयोगित हो रहा है। वजह कया है ?

एक और बात । थोड़ा सा ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति यह जान सकता है यदि वे मानव शरीर की संरचना को देखें । वह आदमी अपने आप नहीं बन सकता । लेकिन, यह ज्ञात होता है कि हर अंग, हर भाग,हर नस, हर जोड़, ... सब कुछ एक व्यक्ति द्वारा ठीक से बनाया गया है । इसी तरह, एक महिला को प्रजनन के लिए उपयोगी अंग और एक पुरुष के कौन दिए हैं ? ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति स्पष्ट रूप से सोचकर उसका निर्माण किया है.... ?

एक महिला के गर्भ में एक बच्चा बनता है अब जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी भूख मिटाने के लिए मां के द्वारा दूध का उत्पादन किया जाता है(यह जान लेना चाहिए कि पहले नहीं आएंगे) जब तक बच्चा छह महीने का नहीं हो जाता, तब तक दूध की ताकत पर्याप्त नहीं होती है, इसलिए खाने,चबाने और खाने को निगलने के लिए दांतों का उत्पादन इस तरह से देखा जाए तो कई चीज देखी जा सकती है ।

एक बीजाणु, एक परमाणु से छोटा अपने सभी अंगों के साथ छह फुट के शरीर में विकसित होता है । यह कैसे संभव है ? क्या यह संयोग है ? यदि एक बीज बोया जाए, तो पृथ्वी उस बीज को अंकुरित करेगी और सैकडोंऔर हजारों फलों को पैदा करेगी । पृथ्वी को उत्पन्न करने वाली वह शक्ति किसने दी ? क्यों है ? मूंगफली, केला, संतरा... इन सभी फलों पर सुरक्षा कवच किसने बनाए हैं ? जो तर्क देते हैं कि भगवान नहीं है ।

तो मौत को क्या तुम रुका सकते हो? क्या मनुष्य के बिना मरे हमेशा के लिए जीवित किया जा सकता है? क्या मनुष्य स्वयं जीवाणु बना सकता है? यदि आप ऐसा पूछते हैं, तो आपको उस व्यक्ति से प्रश्न करना पड़ेगा जो कहता है कि ईश्वर नहीं है । उनके पास कोई जवाब नहीं है लेकिन कुछ खुश हैं कि भगवान नहीं है ।

यह सब क्यों? क्या यह विश्वास करना अच्छा है कि ईश्वर मौजूद है? क्या यह मानना अच्छा है कि कोई नहीं है? चाहे मनुष्य कितना भी महान हो हम सभी को मृत्यु आना तथ्य है । इसलिए आइए मरने के बाद की स्थिति के बारे में सोचें । हम मानते थे कि जब तक हम इस दुनिया में रहते हैं, हम तब तक भगवान मौजूद हैं, आइए सावधान रहें । फिर मान लीजिए हम एक दिन मर जाते हैं । हमारे मरने के बाद, कोई भगवान नहीं हैं, जो हमने सोचा था कि तब तक अस्तित्व में है । तो क्या यह हमारे लिए नुकसान है? लेकिन, जितने साल हम धरती पर रहते हैं। तब तक मानते हैं कि कोई भगवान नहीं है और कोई जीवित प्राणी नहीं है, और हमारे मरने के बाद मानलीजिए कि एक ईश्वर है तब स्थिति क्या होगा इसलिए बेहतर है कि ईश्वर के अस्तित्व को एक नन्हें बच्चे की तरह स्वच्छ मन से मान जाए । बेहतर है कि हम भगवान को पहचान कर, सम्मान कर, पूजा और उनकी सेवा करना उत्तम होगा । लेकिन नास्तिक भाई कहते हैं,

" क्या ईश्वर का अस्तित्व है? हमें
दिखाओ... हम देखेंगे " । भाई... आप देखिए ।
उसके लिए एक समय है ।

तुम मृत्युंजय नहीं हो । तुम इस दुनिया को छोड़ने की समय एक है उस समय में तुम जरूर भगवान को अपने आंखों से देख सकते हो। भगवान न मानने वाले लोगों को विश्वाश दिलाने के लिए अपनी सारी मेधाशक्ति का उपयोग कर तुम जो प्रचार, उपदेश, रचनाएं किए है सभी का याद करके डरने की दिन आयोग। इसलिए मैं आपको पहले से सावधान रहने की चेतावनी देता हूं । मनुष्य की मृत्यु के बाद क्या होता है ?

धार्मिक ग्रंथो में मृत्यु के बाद की स्थिति के बारे में तरह-तरह की व्याख्याएं की गई हैं । हमें उनकी जांच करके बेहतर राय पर आना होगा । लगभग सभी शास्त्र इस बात की गवाह देते हैं कि मानव शरीर में मृत्यु के बाद आत्मा जीवित रहती है । लेकिन " इस आत्मा का क्या होगा ? " उनमें से प्रत्येक ने एक अलग व्याख्या दी । यहीं पर हमें ध्यान देने की जरूरत है ।

हमारे हिंदू शास्त्रों में यह तर्क दिया गया है कि व्यक्ति की मृत्यु के बाद आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करती है और दूसरे जीव के रूप में जन्म लेती है । साथ ही, जब कोई व्यक्ति मरता है, तो आत्मा परमेश्वर के पास जाती है और न्याय का सामना करती है । अगर दोषी के रुप में साबित हुआ तो नरक में जाता है । अगर निर्दोष के रुप में साबित हुआ तो (स्वर्ग) में जाता है । इसका दूसरा तर्क इन दोनों को ध्यान में रखते हुए दूसरा तर्क ठीक लगता है । ऐसा लगता है । पहला तर्क अनुचित और असंभव लगता है । क्योंकि यदि एक आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश कर बार-बार जन्म लेती है तो जीवों का विकास नहीं होता है।

उदाहरण के लिए, भगवान ने अपनी सृष्टी में पहले 1000 लोगों को बनाया है, इसलिए 1000 की संख्या में वृद्धि नहीं होनी चाहिए क्योंकि उनकी आत्मा और शरीर के मरने के बाद, उन आत्माओं का जन्म होगा । क्योंकि वह आत्मा बार-बार जन्म लेती है । क्या स्थिति ऐसी है ?

हम दुनिया की आबादी में तेजी से वृद्धि देख रहे हैं, जो शुरुआत में कम थी । यदि आदिकाल की आत्माएं बार-बार जन्म लेती हैं,तो संख्या में वृद्धि संभव नहीं है, इसके अलावा, इस तरह के पुनर्जन्म में भगवान को कोई लाभ नहीं है ।

और जब दूसरे तर्क की बात आती है, तो लगभग सभी शास्त्र हमारे शास्त्रों से सहमत होते हैं । अर्थात,मनुष्य की मृत्यु के बाद आत्मा का न्याय होगा । साथ ही,पुनर्जन्म नहीं होता है । उसे न्याय में अपने पापों और पुण्य कर्मों का फल जीवन भर भोगना होगा । ऐसा करने से परमेश्वर के कार्य को भी अर्थ मिलता है । इस न्याय के कारण, पापियों को दंड मिलेगा और नीतिमान अनंत सुख में प्रवेश करेंगे ।

" आह.... ऐसा ही होने जा रहा है ?हम वैसे क्यों मानना है ? क्या अपने कुछ देखा है ? " कुछ लोग मुझसे ऐसा पूछते हैं । मुझे पता है लेकिन इस मामले को भी थोड़ा सोच समझ कर लेना चाहिए । क्या यह विश्वास करना बेहतर है कि मृत्यु के बाद ईश्वर और नरक की सजा है ? क्या यह विश्वास करना बेहतर है या न विश्वास करना ।

इसके बारे में सोचो । बुजुर्ग कहते हैं, भलाई से आगे बुराई नकारात्मक सोचें और फिर सकारात्मक सोचें । हमने यह विश्वास करते हुए सावधान रहकर विश्वास करते है कि परमेश्वर का न्याय और नरक का दंड है, लेकिन यदि हम मरने के बाद उन्हें देखते हैं तो वे वहां नहीं होंगे । क्या इससे हमें कोई नुकसान होता है ? नहीं न लेकिन, अगर हम इन सभी को अंधविश्वास के रूप में अशवीकार करते हैं, जीते हैं और मरते हैं जैसे हम चाहते हैं, तो हमारी नियति क्या है अगर भगवान का हमारी हालत क्या होगी।

ज्ञानी पुरुष एक बार, सोचिए । क्या उस समय हमारे पास इसे ठीक करने का मौका होगा ? नहीं होगा । इसलिए उनके बारे में सोचना और ध्यान रखना बुद्धिमानी लगता है जबकि " आज का समय " दीपक रहते हुए घर की सफाई करने का उपहार है । लेकिन उन्हें कुछ भी नहीं मानकर खारिज करना मूढता और मूर्खता होगी ।

भगवान आत्मा को नरक में क्यों भेजता है ?

पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान मनुष्य द्वारा किए गए पापों के अनुसार परमेश्वर मनुष्य की आत्मा को नरक में भेजता है । वास्तविक रूप में पाप क्या है ?

भगवान जो नहीं करने के लिए कहते हैं वह करना पाप है । " जो कहा जाता है उसे न करना " भी एक पाप है ।

अब यदि हम मनुष्यों के जीवन को देखें तो 100 में से एक भी ईश्वर का आदार नहीं करता।

बिल्कुल हर दिन किसी न किसी अवसर पर वचन या कर्म से, सोचने से, चलने से, सोने से.... ऐसे काम कर रहा है जो किसी न किसी रूप में ईश्वर के विरुद्ध हैं । इस पृथ्वी पर एक भी निष्पाप व्यक्ति नहीं है । दूसरे शब्दों में, मनुष्य पापी के रुप में पैदा हो रहा है । क्योंकि जन्म लेने वाला प्रत्येक बच्चा पापी स्वभाव को विरासत में प्राप्त करता है, ठीक वैसे ही जैसे पिता से बीमारी विरासत में मिलती है । इसका अर्थ है कि हम जन्म के समय से ही पापी प्रकृति के साथ पैदा हुए हैं । इसलिए हम छोटी उम्र से ही पापी विचारों और आदतों के साथ बड़े होते हैं ।

सभी जन्म से पापी हैं ।

इसलिए, इस गणना के अनुसार, सभी लोगों को नरक में दंडित किया जाएगा । क्या तुम्हें जाना होगा ? बिल्कुल । क्योंकि,

" पापादा वश्यम मरणं प्रयाति
पापादा वश्यम नरकं प्रयाती "

हमारा आर्य धर्मशास्त्र कहता है

पापियों के लिए मृत्यु और नरक अपरिहार्य हैं ।

और इस पाप और नरक से निकलने का रास्ता क्या है ? धर्म और शास्त्रों में इस पाप से

मुक्ति पाने के क्या उपाय हैं ?

सबसे पहले, मैं ने उनसे पूछा, " मुस्लिम भाई इस्लाम में क्या विश्वास करते हैं " ?

मैं ने उनसे पूछकर जाना महाराज! मनुष्य जन्म से पापी होता है और कर्म से भी पाप करता है । धर्म ग्रंथ इस बात की गवाही देते हैं कि उस पाप के लिए नरक की कड़ी सजा है । और जिस इस्लाम धर्म को आप मानते हैं, इससे छुटकारा पाने के लिए क्या करनी है

नरक से बचने के लिए क्या किया जाए ? वे जो यकीन कर रहे हैं उसे बताएं । वह क्या है कि..... " हमारे मजहब में सभी पापों में बड़ा पाप यह माना जाता है कि, अल्लाह के बगैर अन्य देवताओं का पूजना, उन्हें अल्लाह के बराबर बनाना । यही बहुत बड़ा पाप है । बाकी सभी पाप हिसाब में बड़े पाप नहीं लिया जाता " कहा किसी एक ने । और एक ने कहा – एक पाप हमसे होने पर, माफी मांगने पर वह पाप चला जाता है । कहा यही नहीं " मक्का की यात्रा (हजरत) जिंदगी में एक बार करली गई तो उसके जीवन भर के पाप सभी जाकर, उसे मोक्ष सिद्धि मिलेगी " कहा और क्या कहा कि " रोज नमाज पढ़ना, रोजा रखना, दान–धर्म करने से भी पापों की क्षमा होती है " कहकर बोले थे ।

अपनी आत्मसाक्षी से, धर्मबद्ध से सोचे तो पापों की क्षमा पाकार, मनुष्य अपने आपको बदलकर स्वर्ग (मोक्ष)पाने के लिए उन्होंने जो विषय बताई । मुझे ऐसा लगा उनसे प्रश्न किया ।

क्योंकि " भगवान धर्म, न्याय को नहीं टाल सकते अगर ऐसा हुआ तो वो भगवान नहीं हो सकता । "

इसलिए, उनके कहने पर " पाप करके पश्चाताप पड़े तो उस व्यक्ति को क्या भगवान छोड़ देगा " यह सच है तो, मनुष्य पाप करना क्या छोड़ेगा ? और पाप कार्य करता ही रहेगा ? अवश्य करता ही रहेगा....

क्योंकि पश्चाताप पड़ने से पाप निकल जाएगा ना....

मैं ने फिर इस तरह से पूछा “ जी ! मैं ने एक आदमी को मार डाला । उसका परिवार नष्ट हो गया । उसके बाद मैंने पश्चाताप किया । मैंने नमाज अदा की । मैंने रोजा रखा,मैंने हज किया,मैंने दान किया ” भगवान मुझे यह सब करने से माफ करेगा । क्या तुम सोचेंगे भगवान उस आदमी को क्या कहेंगे, जिसे मैंने और उसके उजड़े हुए परिवार ने मार डाला अगर अकेला छोड़ दिया जाए ? क्या तब परमेश्वर न्याय होगा ?

(न्यायाधीश की तरह लग रहा है)

और न्याय क्या है ? “ न्याय करना गलत करने वाले को दंड देना है । ” मुस्लिम भाई इस के बारे में नहीं सोचते ।

आप इसे पढ़कर सोचिए । क्या वे जो मानते हैं वह उचित है ? जैसा कि ऊपर बताया गया है, मनुष्य एक पाप पर नहीं रुकता । वह कोई हजारों पाप कर रहा है । उनका फैसला क्या है ?

और मेरा जन्म “ हिंदू धर्म में पापों से छुटकारा पाने के लिए क्या करना चाहिए ” मैंने वह खोजा ।

एक तरफ से हिंदू पुराणों में और दूसरी तरह से वेदों में पापों से मुक्ति का मार्ग बताया गया है । खासकर 100 में से 99 हिंदू भाई मानते हैं । अर्थात “ यदि हम अपने पापों के बदले में प्रभु को भेंट देंगे तो हमारे सारे पाप दूर हो जाएंगे और हमें मोक्ष की प्राप्ति होगी ”

दुग्ध अभिषेक, पुष्पाभिषेक, घी अभिषेक, कोटि दीपार्चन , साहस्त्रार्चन, कुंकुमार्चन , कुंभाभिषेक, पुष्कर स्नान, पुण्यनदी स्नान, गोदान, भूदान, जाप, तप, व्रतम, मंडलदीक्षा, मालधारण, ऊर्ध्वाधर कर्म, तलनीलालु, अगरबात्ती, नारियल, मंगला आरती..... " यह सब पेश किया जाता है

लेकिन यहाँ एक और सवाल उठता है । अर्थात " क्या गलत करने वाले को दंड देना उचित है, क्या उनसे पुरस्कार लेकर चले जाना उचित है, क्या भगवान हमारे द्वारा दिए गए प्रसाद को वास्तव में स्वीकार करते हैं ? "

यदि परमेश्वर हम लोगों की भेंट ले लेता है जिन्होंने पाप किया है और हमें छोड़ देता है, तो परमेश्वर हमारे पाप का भागी हो जाता है, परंतु वह न्यायि और धर्मी कैसे हो सकता है ? यदि यह सच है कि परमेश्वर जो हम देते हैं वह ले लेता है और हमारे पाप को छोड़ देता है, तो क्या पापी उसे छोड़ देता है ? क्या यह चार और करेगा ?

इसलिए हम मामले में,जो कर रहे हैं वह सही नहीं है । 100 के 100 % भगवान हमारे प्रसाद को स्वीकार नहीं करते हैं, वे उसके लिए अमान्य हैं ।" जिनके पास ज्ञान है, , वे मेरी बातों पर विचार करेंगे । अज्ञानी क्रोधित होते हैं " । लेकिन हिंदू ग्रंथो में, वैदिक ग्रंथो में और कुछ ब्राह्मणों में, आर्य ऋषियों ने एक और तक दिया । वह है...

“पापोहं , पापकर्माणं ,
पापात्मा,पापसंभव,
त्राहिमांम,कृपया देव शरणागत वात्सला,
अन्यधा सरणं नास्ति त्वमेव सरणं मम : ”

अर्थात, मैं पापी हूँ , मैं पाप कर्म कर रहा हूँ , मेरी आत्मा भी पाप में है,मैं पाप में पैदा हुआ है । दयालु भगवान दया करो, मैं अपने पापों से छुटकारा नहीं पा सकता, मैं उनसे छुटकारा नहीं पा सकता, जब तक तुम मुझे कोई राह न दिखाओ मेरी कोई दिशा नहीं है । अर्थात, “ मनुष्य के पापकर्म दूर हों और दंड से बचा जाए । अर्थात, मनुष्य अपने पापों को तब तक दूर नहीं कर सकता जब तक कि ईश्वर कोई मार्ग न दिखाए । ईसाई धर्म भी इस उक्ति से सहमत है ।

ईसाई वास्तव में क्या मानते हैं ?

बाइबल का कानून घोषित करता है कि “ जिस मनुष्य ने पाप किया है, उसे उचित दंड दिया गया है ” । यहां एक पेचीदा समस्या है । ईश्वर, सृष्टिकर्ता, हम सभी का पिता है । साथ ही, वह न्यायाधीश भी है । अब यदि वह हमारे बारे में एक पिता के रूप में सोचता है । वह हमारे पापों को क्षमा करेगा, तो हम खुश होंगे । लेकिन, न्याय भगवान से पूछता है, क्योंकि भगवान को भी न्याय का सम्मान करना है और उसका पालन करना है । अगर हम न्याय का सम्मान करते हैं और हमें दंड देते हैं, तो न्याय खुश होगा, लेकिन इस बात की संभावना है कि हम ईश्वर को अस्वीकार कर देंगे ।

यह क्या है, पिताजी! आप भविष्य के समझदार हैं, आप हमें बनाने से पहले हम कैसे होंगे

नहीं समझते हो हमें क्यों बनाया है जो अस्तित्व में नहीं है हम आपके विरुद्ध पाप क्यों करते हैं ? आप हमें नरक में क्यों भेजते हैं ? क्या यह बेहतर नहीं होता अगर हम बिल्कुल भी नहीं बनाए गए होते ? आप एक न्यायाधीश के रूप में मुझे दंडित करने जा रहे हैं । और " पिताजी उसे दंड से बचने के लिए आपने हमारे लिए क्या किया ? " ऐसी संभावना है कि हम उस से प्रशन कर सकते हैं । इसीलिए ईश्वर जो भूत,भविष्य और वर्तमान समय को जानता है, वह इस समस्या का समाधान है साधक ने हमें बनाया है और उपाय क्या है । इसे आसानी से समझने के लिए मैं एक छोटा सा उदाहरण देता हूं ।

एक न्यायाधीश है । वह बहुत अच्छा, धर्मी और न्यायी है है। उनका एक बेटा भी था जिसे वह बहुत प्यार करते थे । बेटा बड़ा हो गया और बुरी दोस्ती ने उसे बिगाड़ दिया । वह अपने दोस्तों के साथ अवैध गतिविधियों में शामिल हो गया और अंततः एक घातक हत्यारे में बदल गया । वह अपने पिता का सम्मान करता नहीं, परवाह करने वाला नहीं । आखिर एक दिन उसके सारे कुकर्मों का पर्दाफाश हो गया । उसे गिरपत्तार किया गया था । पुलिस अधिकारियों ने उसे लाकर न्याय के लिए न्यायालय में पेश किया । बात यह है कि जज उनके चाचा हैं । जज साहब अपनी बेंच पर बैठ गए । आरोपी को लाकर पिंजरे में रखा गया । लोग इसे एक परीक्षा के तौर पर देख रहे हैं । क्योंकि यह एक पिंजरे में खड़ा था । वह अपने बेटे को किस प्रकार का न्याय देगा ।

वहाँ वाद प्रतिवाद हुआ था । उसके द्वारा किए गए सभी अपराध और उनके सबूत न्यायाधीश द्वारा प्रस्तुत किए गए और उनकी जांच की गई । क्या आप इन सभी अपना अपराधों को स्वीकार करते हैं ? उसने पूछा ।

आरोपी ने सहमति से सिर हिलाया । जज ने फैसला सुनाया । आरोपी द्वारा किए गए सभी अपराध साबित हो चुके हैं और आरोपी ने इन सभी अपराधों को स्वीकार कर लिया है, इसलिए मैं उसे आईपीसी की धारा 302 के तहत मौत की सजा देता हूं ।

वहाँ मौजूद सभी लोग आश्चर्य में ताली बजाता है । क्योंकि छोटा भाई भले ही अपना हो, धर्म को धर्म कहना चाहिए । जज ने साबित कर दिया कि इसे मिस नहीं करना चाहिए । उन्होंने घोषणा की कि फॉसी अगले महीने के पांचवें दिन सुबह 06:00 बजे की जाएगी । आरोपी को अधिकारियों ने पकड़कर जेल में डाल दिया । जज साहब जहां बैठे थे, उन्हें इंसाफ दिया ।
जजमेंट खत्म हो गया है ।

अब वह उसे आसान से नीचे उतर आया । वह अब कौन है ? पिता वह जेल में अपने बेटे के पास गया । उसने कारागार में सिर नीचे करके बैठे अपने चिंता ग्रस्त बेटे का अभिवादन किया । क्या आप मृत्युदंड से दुखी हैं ? पिता से पूछा । मुझे फांसी पर लटकाए जाने का दुख नहीं है, लेकिन मैं तुम्हारे गर्भ में क्यों पैदा हुआ, जो न्याय और धर्म से प्यार करता है ? मैं पीड़ित हूँ , बेटे ने आह भरी । क्या आप जानते हैं कि मैं अभी क्यों आया हूँ ? पिता ने फिर से पूछा ।

लगता है वे देखने आए हैं, बेटे ने जवाब दिया । "मेरे पिता एक न्यायाधीश हैं क्योंकि मैं तुम्हें फांसी देता हूँ । आपने सोचा होगा कि उन्होंने जज के पद के बारे में सोचा और न्याय किया, लेकिन मुझे पिता के रूप में नहीं सोचा " ? तुम्हारे अपराध लेकिन अब बाप की जिम्मेदारी बाकी है । मैं उसे पूरा करने आया हूँ । बेटे ने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा ? हां, अब मैं पिता बनकर बचाने आया हूँ। मेरी रक्षा कैसे करोगे ? क्या मुझे सजा देना ही न्याय है ना ? क्या सजा को रद्द करना और मुझे बाहर निकलवाना न्याय के विरोध हीं है । बेटे ने पूछा ।

इसके लिए पिता उसे दंड देंगे । जरूर, लेकिन तुम्हें नहीं । और मुझे हां तुम्हारी सजा को मैं भुगतुंगा । जिसकी तुम हकदार हो...मैं तुम्हें उतना ही प्यार करता हूँ, जितना न्याय से प्यार करता हूं । मैं न्याय को टाल नहीं सकता । इसलिए मैंने गलत कामों की सजा देकर न्याय का सम्मान किया । उसी तरह अपने बेटे को मेरी आंखों के सामने मरते हुए और सजा भुगतते हुए देख नहीं सकता । इसलिए अदालत जो मौका नहीं दिया, एक पिता के रूप में मैं तुम्हारी सजा भुगतुंगा और तुम्हें रिहा कर दूंगा । अब सावधानी से जियो, उन्होंने ने अपने बेटे को आश्वसन किया, अधिकारियों को इकट्ठा किया, ऐसा कुछ जो किसी ने कभी भी न्याय प्रणाली में नहीं किया है । मैं वह काम करने जा रहा हूं । यानी अपने बेटे की जान के बदले मैंने अपनी जान देना चाहता हूं । वह अपने गलत जीवन को सुधार कर जीने का उसे एक मौका देना चाहता हूँ।

कृपया अपनी मदद करने की याचना की और अपने बेटे की जगह ले ली और बेटे को आजाद कर दिया ।

फांसी का समय निकट है । अधिकारी उनके पास आए । उन्होंने कहा, " सर हम आपको कल फांसी पर लटका देंगे । क्या आपकी कोई आखिरी इच्छा है ? यदि हां, तो कृपया बताइए । उन्होंने पूछा, जब ने फांसी पर लटके व्यक्ति के परिवार वालों को फांसी देखने की इजाजत नहीं होती है, लेकिन मेरे बेटे को मुझे फांसी पर लटका देखने का मौका दो । मुझे उसकी आंखों के सामने लटका दो । " यह मेरी अंतिम इच्छा है ।

अगली सुबह, बेटे को देखते ही पिता ने फांसी लगा ली । जब पिता अपनी गलतियों के लिए उसकी आंखों के सामने मर रहा था, तो बेटा फूट-फूट कर रो रहा था । उसे अपने गलत कामों से नफरत हुई थी ।

अब बताई गई कहानी में यह पिता तीन चीजों को पूरा करने में सक्षम था ।

1. एक न्यायाधीश के रूप में उन्होंने अपराधी को न्याय के अनुसार दंडित किया
2. एक पिता के रूप में उन्होंने अपने पुत्र को अधिकृत दिया और बचाया
3. अपने बेटे के लिए अपनी जान दे दी और अपना मन बदल लिया । अब वह बेटा अपनी पुरानी जिंदगी में वापस नहीं जा सकता । अगर वह जाने की कोशिश करता है, तो उसके पिता का बलिदान उसे रोकेगा ।

निश्चय ही इस संसार की अदालत एक को दी हुई सजा दूसरे को भोगने की अनुमति दें, या न दें

भगवान की अदालत इसे मंजूर करती है ।

आप इस श्रेष्ठ न्याय का पालन करके ही पापों की सजा मिली । पापी बच जाता है । परमेश्वर के प्रेम और बलिदान ने पापियों को बदलने और धर्मी बनाने में मदद हुई यदि परमेश्वर ऐसा करता है तो हम अपने पापों से मुक्त हो सकते हैं, और कोई रास्ता नहीं है ।

इस प्रकार " प्रभु ईसा मसीह ही एकमात्र पिता है जिसने बच्चों के पापों के लिए अपना जीवन दे दिया । वह बच्चे ही हैं " संक्षेप में यह बच्चों की गलती है सजा दी जानी चाहिए, या उनके पूर्वजों को उनके स्थान पर सजा भुगतना चाहिए । हम एक के पाप को और एक भोगने साध्य हो सकता है नहीं हो सकता । क्योंकि हम सब पापी हैं ।

कोई आजाद नहीं है । सब पाप के बोझ तले दबे हुए हैं । इसलिए " पवित्र आत्मा, जिसके पास कोई पाप नहीं है, तो सभी का बोझ उठाने के लिए आना पड़ा " । वह सर्वोच्च आत्मा जो सबके लिए आया, वह प्रभु यीशु मसीह है । " कुछ महान वैदिक ऋषि जानकर कुछ श्लोक लिखे ।

सामवेद तांडिया महा ब्राह्मण में...

"सर्वपाप परिहारार्थों रक्त प्रोक्षणवश्याम,
तदरक्तम परमात्मेना, पुण्यदान बलियागम "

का अर्थ है " मानव जाति के पापों को साफ करना हो तो परमात्मा बलि बन रक्त बहाए । "

रक्त बहाने वाला परमात्मा कौन है ?

जिन देवी – देवताओं की हम पूजा करते हैं, क्या उनमें प्रेम की कोई आकृति है जिसने हमारे पापों के प्रायश्चित और न्याय की रक्षा के लिए बच्चों की खातिर अपनी जान दे दी ? यदि ऐसा है तो आराधना करो, तुम्हें यीशु की जरूरत नहीं ।

यदि एक ईसाई इस समय मर जाता है, तो उसके पास एक आशा है यदि उसकी आत्मा न्याय आसन के सामने खड़ी होती है और उसे मुकदमे में लाती है, तो उसके लिए उत्तर देने के लिए " यीशु मसीह जवाबदारी " है । वह गवाही देते हैं । क्या ? मैं ने उसके जीवन के लिए अपना जीवन दे दिया ।

इसलिए उसे छोड़ दो ।

परंतु जो परमेश्वर हमारे लिए इस रीति से मरा, जिस परमेश्वर ने हमारे पापों का दंड सहा, क्या हमारे उपासकों में कोई निष्पाप और पवित्र पुरुष है ? कोई भी नहीं है । और यदि हम उनके जीवन को देखें यहां तक कि जिनकी हम आराधना करते हैं वो भी हमारी तरह के वसानओं के गुलाम हैं, अर्थात, अरिशद वर्गों के गुलामी हैं । उनके जीवन में गलतियां भी हैं । उन्होंने भी हमारी तरह पाप किया है (कृपया 18 पूराण पढ़ें)

भाई और बहन इस किताब को पढ़ रहे हैं!

आपके पास विवेक है । कट्टरता, स्वयं को धोखा के बिना सोचो ।

जिस धर्म में आप विश्वास करते हैं, उस पवित्र मार्ग में जो आप कर रहे हैं, क्या आपके पास अपने पापों को दूर करने और नरक से बचने का मौका है ? जांच करना आपकी ही जिम्मेदारी है इसलिए मैं इसे आपके निर्णय पर छोड़ता हूँ । यदि तुम इन बातों की उपेक्षा करते हो तो मैं कहता हूँ , " तुम्हें जीवन में बड़ी हानि मृत्यु के बाद अनंत कष्ट युग युगों तक अनंत अग्नि का सामना करना पड़ेगा " क्योंकि आपको इस दुनिया को छोड़ना ही पडेगाना ?

इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ सूक्त के रूप में लिखा गया है वहाँ हैं

" ऋग्वेद 10 मंडल 90 वीं सूक्तों के पुरुष सूक्तम कहता है कि पहले जन्मे आदि संभूत का बलिदान किया गया था । इसके अलावा, शुक्ल यजुर्वेद संहिता, 23 अध्याय 17 मंत्र में अग्नि एक जानवर बन गया, यज्ञ में जल गया फिर से उठ गया और पृथ्वी का शासक बन गया । यह सब यीशु मसीह में पूरा हुआ है । इनकी पूर्ति हम किसी और में नहीं पा सकते!

अथर्व वैदिक गोपध ब्राह्मण पेज नं. 41 में,

" चत्वारि, श्रृज्ञत्रयो अस्य पादाद्वे शीर्ष सप्त
हस्तातो अस्य त्रिधा बधो वृषभो रोरवीति
महादेवो मर्त्यम आविवेश इति "

इस श्लोक का अर्थ है, महादेव हमारे लिए एक संत व्यक्ति के रूप में आएंगे और यज्ञ(मृत्यु) बनेंगे । इस प्रकार... कई श्लोकोम में यीशु का स्पष्ट उल्लेख है । वैदिक ऋषियों द्वारा किए गए यग सात हैं । उनमें से " आजमेधम " का यग गवाही देता है और यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ने की स्पष्ट रूप को घोषणा करता है ।

"प्रजापतिर देवेब्यं आत्मानाम यज्ञ, कृत्वाप्रायश्चित "

भाव : पाप के बोझ को दूर करने के लिए, प्रजापति को स्वयं यज्ञ के रूप में (अहूताई) आहुति देनी चाहिए । ऐसा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्वम में कहा गया है । एक दिन एक शालिवाहन हिमगिरी शिखर पर गया। वहाँ एक महापुरुष श्वेत वस्त्र पहने और तेजोमाय दिखाई दिया । शालिवाहन ने उन्हें पूछा । महात्मा आप कौन हैं ? तो उसने कहा....मैं....

श्लोक : " कोभवानीति तम प्राहा शोभो वाच मुदानवितम
ईशपुत्रम च मॉविद्धि कुमारी गर्भ संभवम
मलेच्छ धर्मस्य वक्तारम मसेहूहम समागत :
अहम, एषामसीहा नामा "

उसने उत्तर दिया कि । मैं ईश्वर का पुत्र हूँ , जो पृथ्वी पर एक कुमारी के गर्भ में जन्म लेने वाला हूँ और मैं सत्यव्रत की अवस्था में ईसा मसीह का नाम धारण करूँगा ।

इसके अलावा, स्वामी विवेकानंद ने भी ईसा मसीह के बारे में एक विशेष गवाही दी।

प्रबोध रत्नाकरम किताब के पहले पन्ने और दूसरे पन्ने पर यीशु के बारे में तीन साफ – साफ बातें कही गई हैं ।

1) परमपिता को जानना न मुमंकिन है । हम केवल परम पुत्र को ही जान सकते हैं इसका अर्थ है कि जो केवल मानव रूप में मसीह के माध्यम से जान सकते हैं ईसा के द्वारा ही किसी और के द्वारा परमपिता को नहीं देख सकते।

2) मसीह संसार के पापों को उठा लेता है । यीशु को मनुष्यों के पापों को उठा लेने और उन्हें दूर करने के लिए ईशा के सिवाय और कोई रास्ता नहीं ।

3) विवेकानंद जी ने कहा कि यीशु में कोई अपरिपूर्णता नहीं है । यीशु में कोई दोष नहीं है जिसका अर्थ है कि अब तक हमने जिन लोगों की सेवा की है वे सभी अपूर्ण हैं । वास्तव में यदि हम उनके जीवन को पढ़ते हैं तो हमें भी ऐसा ही लगता है ।

ऐसी कई बातों का उल्लेख वेदों में मिलता है अन्य पुस्तकों में भी लिखा है ।

तो मेरे प्यारे भाइयों और बहनों ! यीशु को आप कौन समझते हैं ? " क्या आप जानते हैं ? आप अपने मूल निर्माता का मजाक उड़ा रहे हैं, यीशु को एक दोहरी जाति के भगवान कहके गलत समझ रहे हैं और उनके बारे में कम सोच रहे हैं । आप उन्हें श्वेत जाति के भगवान कहकर मजाक उड़ा रहे हैं । इसके अलावा, आप उस महान व्यक्ति का तिरस्कार कर रहे हैं जिसकी महिमा की गई थी । वैदिक ऋषियों द्वारा ईसा मसीह गोरे लोगों के, बल्कि काले लोगों के भगवान नही है ।

“ यीशु मसीह सभी के प्रभु है । ” फिर से सोचे अपना मन बदलें और प्रभु यीशु में विश्वास करें... तब आप और आपका परिवार बचाया जाएगा । अंत में आपके लिए कुछ और जानकारी.....

सृष्टिकर्ता परमेश्वर के गुण :

1) वह अकेला ही सृष्टि, स्थिति, लय का कारक होना चाहिए ।

2) निष्पाप संत होना चाहिए ।

3) न्याय और धार्मिकता में अचूक होना चाहिए ।

4) पापी मनुष्य को नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि वह उसे पापों से निकलने का रास्ता दिखाने में सक्षम होना चाहिए ।

5) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, माशचर्य उसे अरिषद्वर्गों का विजेता होना चाहिए ।

6) इस सृष्टि का आदि, गमन और अंत बताने में सक्षम होना चाहिए ।

7) जो प्यार दिखा सकता है दुनिया में कोई और से नहीं दिखा सकते जैसा प्यार दिखानेवाला होना चाहिए ।

8) वह ऐसा होना चाहिए जो प्रतिफल अपेक्षा न करें ।

9) सभी पुरुषों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण बनाना चाहिए ।

10) बिना जाति, क्षेत्रीय और वर्ग भेद के सभी उतना ही प्यार करने वाला पिता होना चाहिए ।

11) उसे दंड देने के बजाय क्षमा करने, प्यार करने और रक्षा करने में प्रसन्न होना चाहिए ।

12) सबसे विनम्र होना चाहिए ।

13) मृत्यु को जीतना चाहिए ।

विचार करें कि उपरोक्त विशेषताओं वाला कोई देवता आपके धर्म या मार्ग में मौजूद है या नहीं । अपनी खोज में मुझे इन सभी मापोंवाला केवल एक ही व्यक्ति मिला । वह प्रभु यीशु मसीह हैं । चाहे तो जाँच करके देख लें.....

बाइबल साक्षय

1) मैं पहला हूँ , आखिर हूँ । (प्रकाशितवाक्य 1:18)

2) उसने वह पाप नहीं किया, और उसके मुँह से पासवान की कोई बात नहीं निकली । (1 पतरस 2:22)

3) हे यहोवा! तेरी गति धर्ममय और सच्ची है ।

(प्रकाशित वाक्य 15:3)

धर्म और न्याय तेरे सिंहासन की नीव हैं । (भजन 89:14)

4) उसने हम से प्रेम रखा,और अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है । (प्रकाशितवाक्य 1:6)

5) भूत, वर्तमान और भविष्यत कालो में सदा होने वाले परमेश्वर पवित्र,पवित्र,पवित्र है । कहकर दीवारात बोलो ।

(प्रकाशितवाक्य 4:8)

6) मैं वर्तमान, भूत,भविष्य में ही हूँ । (प्रकाशितवाक्य 1:8)

7) मैं प्रार्थना करता हूँ, कि तुम मसीह के उस प्रेम को जानोगे जो ज्ञान से परे है, और यह कि तुम सामर्थी हो जाओगे ।

(इफिसियों 3:19)

8) वह सब को जीवन और श्वास देने वाला है, इसलिए मनुष्यों के हाथ से उसकी सेवा नहीं होती, मानो उसे किसी वस्तु की घाटी हो । (आपो.का 17:25)

9) आप उनके पदचिन्हों पर चले हैं । (1 पतरस 2:21)

10) तुम्हें यह समझना कि ईश्वर पक्षपाती नहीं है । वह हर जाति में उसे ग्रहण करता है, जो उस से डरता और धर्म से चलता है । यीशु मसीह सबका प्रभु है । (आपो.का 10:34-36)

11) जीसस ने कहा- मैं तुम्हें दंड नहीं दूंगा, उससे कहा कि जाओ और फिर पाप मत करो । (यूहन्ना 8:1-11)

12) मसीही यीशु के समान मन रखो । वह एक मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ और अपने आप को दीन किया, यहां तक आज्ञाकारी बना रहा कि मृत्यु, अर्थात, क्रूस पर मृत्यु पर्यंत ।

(फिलिप्पीयों 2:5-8)

13) शास्त्रों के अनुसार वह तीसरे दिन फिर जी उठे ।

(1 कुरिन्थियों 15:3-4)

ये सभी धर्म ग्रंथ यह स्पष्ट करते हैं कि यीशु ही सच्चे ईश्वर हैं, संसार के उद्धारकर्ता है जो पाप के बोझ तले दबी मानवता को बचाने के लिए आए थे, वह बलिदानी व्यक्ति जिसने हमारे पापों के लिए अपना जीवन दे दिया और एकमात्र जिसने मृत्यु और पुनरुत्थान पर विजय प्राप्त की फिर से ।

मां की गोद से दूर उस नन्हे बच्चे को कितना भी दिलासा देने की कोशिश करें उसे अपने दुख से राहत नहीं मिलती, उसे शांति नहीं मिलती केवल जब वह आखिरकार अपनी मां की गोद में पहुंचते ही

बालक दुखों से मुक्त होकर शांति को प्राप्त करता है । साथ ही,आप चाहे जितने लोगों की पूजा करें,मां जैसे मूल निर्माता को छोड़कर आप अपने दुख से मुक्त नहीं होंगे और मन की शांति का अनुभव नहीं करेंगे । यीशु मसीह सृष्टिकर्ता है जो आपके लिए एक मां के समान है । यीशु ही एकमात्र ईश्वर हैं जो रोगी को स्वास्थ्य, मन को शांति और आत्मा को मुक्ति दे सकते हैं ।

ये तीन धार्मिक मान्यताए मैं ने आपके सामने रखी हैं । गौर कीजिए कि इनमें से कौन सी मान्यता सही है । बुद्धिमान लोग कृपया इन बातों पर विचार करें और तय करें कि किया सही है और निर्णय लें । सत्य के मार्ग पर चलो और नरक से बचो ।

सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता यीशु के बारे में अधिक जानने के लिए बाइबल पढ़ें ।

आपने इस प्रस्तुत को पढ़कर और दूसरों को इसका परिचय देकर अपने जीवन में एक अच्छा काम किया होगा ।

आशीर्वाद का.....